हनुमान बाहुक

।। जय श्री राम।।
।। जय श्री हनुमान।।

सूर्योदय सम रंग है जिनका। हनुमान जी नाम है उनका।।
सिया शोक को हरने वाले। काल को भी वश करने वाले।।
वन रूपी लंका को जलाए। गर्व दानवों का जो मिटाए।।
हैं भक्तों की वो सुनने वाले। सदा समीप ही रहने वाले।।
जप सुमिरन से खुश हो जाते। दुःख संकट भक्तों का मिटाते।। 1।।

सुमेरू जैसा तन है जिनका। सूर्य करोड़ों सा तेज है उनका।।
हृदय विशाल भुजा बलवान। नख और तन हैं बज्र समान।।
पीले नयन भौंह मुख विकराल। पूँछ कठोर है दुष्टों को काल।।
तुलसीदास जी है यह कहते। जिसके हृदय ये हनुमत रहते।।
दुःख और पाप ना उसको सताते। सपने में भी निकट ना आते।।2।।

स्वामी कार्तिकेय, शिव, परशुराम। दैत्य और देवता वृन्द महान।।
युद्धरूपी ये नदी अपार। कर सकते इन्हें हनुमत पार।।
योद्धा चतुर है प्रतिज्ञावान। बड़े यशस्वी हैं कीर्तिमान।।
जिनका यश रघुनाथ भी गाऐ। जग सिन्धु को भी जो सुखाऐ।।
स्वामी वो तुलसी के पवन कुमार। बिना इनके ना हो असुर संहार।।3।।

विद्या सीखने सूर्य पे आए। सूर्य देव वहाना बनाए।।
मैं नहीं कहीं स्थिर रह पाऊँ। ऐसे विद्या कैसे सिखाऊँ।।
सूर्य ओर फिर मुख वो करके। पीठ पैरों की ओर को करके।।
हनुमान जी गगन में आए। सूर्यदेव से विद्या पाए।।
देखके इन्द्रादि लोकपाल। बृह्मा, विष्णु, शिव से कमाल।।
अचरज कर रहे मन में भारी। क्या कहने हनुमत वीर।।
कहते हिम्मत , बल और धीर। सब मिल करके धरे शरीर।। 4।।

अर्जुन के रथ की पताका पर। जब कीन्हे ये गर्जन कपिवर।।
कौरव सेना में मची खलवली। द्रोण–भीष्म समझे हैं कपिवली।।

बल है वीर रस रूपी सिन्धुजल। धरती से सूर्य तक खेलने में सफल।।
सब योद्धागण शीश झुकाकर। धन्य हुए कपि दर्शन पाकर।।
जीवन सबने धन्य बनाया। जग में जीने का का फल पाया।। 5।।

जाना सिन्धु गोखुर के समान। लंका जला के करी वीरान।।
खेल में द्रोणागिरि उठाए। बेल के फल सम उठाके लाए।।
रामराज में जो संकट आया। लखन को बूटी लाके बचाया।।
हैं बड़े साहसी सामर्थ्यवान। मेरे स्वामी बली हनुमान।।
जिनकी भुजाऐं दीर्घ महान। लोकपालों का पालन स्थान।। 6।।

कच्छप पीठ पे जिनके पद गड़हे। सिन्धु जल को वो बर्तन बने।।
राक्षस स्वयं जिसमें छुपाए। मत्स्य बड़े जहाँ घर भी बनाए।।
रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद। ईंधन तो कपि भीषण आग।।
भीष्म पितामह का है बयान। कोई बली ना इनके समान।। 7।।

राम के दूत पवन के पूत। अंजनी माँ को दें खुशी अद्भुत।
असंख्य सूर्यों के तेज वाले। सीता का शोक हरने वाले।।
पाप और अवगुण के संहारक। शरणागतों के हैं ये रक्षक।।
लक्ष्मण को हैं प्राणों प्यारे। दरिद्र रूपी रावण को मारे।।
प्राणी सभी गुणी और बलवान। स्वामी रखो हृदय हनुमान।। 8।।

दानवों की सेना को जो मारे। जिनका गान करें वेद भी सारे।।
कारागार से देव छुड़ाए। ऐसा बली और नजर ना आए।।
अन्धकार व पाला हटाते। सेवकरूपी कमल बचाते।।
तुलसी को बस इनपे भरोसा। और शोक बिल्कुल नहीं कैसा।।
राम दुलारे शिव स्वरूप। कलयुग में कल्पवृक्ष के रूप।। 9।।

महाबल सीम महा विकराल। रामजी के चुने योद्धा विशाल।।
बज्र समान शरीर वाले। रण में कोलाहल करने वाले।।
सुन्दर करूणा व धैर्य की खान। मन से धर्माचारी महान।।
दुष्टों का जो नाश हैं करते। भक्तों के दुखड़े हैं हरते।।
तुलसी के दुःख हरने वाले। राम के सेवक हिम्मत वाले।। 10।।

सृष्टि रचना को बृह्मा जैसे। पालन को हैं विष्णु जैसे।।
मारने को हैं रूद्र के जैसे । और जिलाने को अमृत जैसे।।
धारण को हैं धरती जैसे। अंहकार को सूरज जैसे।।
खलों कों दुःख वो देने वाले। भक्तों को संतुष्ट करने वाले।।
तीनों लोकों को दुःख से छुड़ाते। तुलसी के ही वो नाथ कहाते।। 11।।

सेवक कपि की सेवा समझके। रघुवर रहें अहसान में दबके।
शिवजी भी इनके पक्ष में रहते। देव इन्द्र भी इनसे नबते।।
देव और दानव हाथ जोड़ते। राजे–महाराजे पग पड़ते।।
इनके सेवक का बुरा करके। कोई नहीं रह सकता बचके।।
उनका भला संसार में होता। जिनको है हनुमत पे भरोसा।। 12।।

दासों व गौरी सहित शिव शंकर। कृरपा करते अपनी उस पर।।
सब लोकों में शोक रहित वो। नहीं किसी के भी आश्रित हो।।
जिसपे कृपा हनुमानजी करते। उसपे दयान सिद्धमुनि होते।।
पालन करते शिशु समान। ऐसे दयालु हैं करूणा निधान।। 13।

करूणाधााम बलबुद्धि निधान। महिमावान गुण ज्ञान के धाम।।
रामभक्त शंकर अवतार। भक्त को करते हो भव पार।।
अर्थ धर्म व मोक्ष के दाता। चरणों में रखे तुलसी माँथा।।
राम के रीति वेद विधि पण्डित। तुलसी आपका दास अखण्डित।। 14।।

राम काज जो मन को अगम थे। किए आपने तन से सुगम थे।।
देवों को मुक्त कराने वाले। रण में कोलाहल करने वाले।।
हर युग गाथा यश की गाए। तुलसी को वह बल क्यों न दिखाए।।
सुनके यह साधु सकुचाए। और दुष्टजन हर्ष हैं मनाए।।
मेरे भी दुःख हरिए सारे। हो प्रसन्न ज्यों सबके निवारे।।15।।

ज्ञानशिरोमणि तुम हनुमान। भक्तों के हृदय में है स्थान।।
मैं किसका प्रभु बिगाड़ करता। जो ना आपकी दया मैं पाता।।
सेवक से क्यों तोड़ा नाता। इसमें मेरा दोष क्या दाता।।
क्या है दोष कहो, मैं सुन पाऊँ। आगे जो सावधान हो जाऊँ।।16।।

हे कपि जिसको आप बसाए। उसको ना शंकर भी गिराए।।
और जिस घर को आप मिटाए। उसको ना फिर कोई बसाए।।
नाम आपका जो भी ध्याते। मकड़ी जाल सम दुःख हट जाते।।
मेरी बार को क्या बूढ़े हो गये। या दया करते–करते थक गये।। 17।।

सिन्धु लांघ असुरों को हराया। लंका जैसे गढ़ को जलाया।।
असुर थे हाथी के बच्चों समान। सिंह बन मिटाया नामोनिशान।।
आपके जैसे स्वामी हे होते। तुलसी दोष और दुःख से रोते।।
बनके प्रभु वन रूपी बाज। मारो दुष्ट दुःख पक्षी को आज।। 18।।

वाटिका का विध्वंश किये तुम। रावण की ना परवा किये तुम।।
मेघनाद, कुम्भकर्ण के जैसे। कितने ही योद्धा पटके ऐसे।।
शत्रु रूपी तिनकों को राम का। करे प्रताप है काम आग का।।
हनुमत उनको पवन रूप हैं। तुलसी के रक्षक स्वरूप हैं।। 19।।

अपनी प्रतिज्ञा ना नाथ भुलाओ। सबकी बाधा आप मिटाओ।।
चरण पकड़ता तुलसी आज। क्षमा करो गलती कपिराज।।
अपनी साहिबी कपि सँभालों। दीन पे भी नजरें अब डालो।।
हूँ स्वामी गर मैं अपराधी। करो दुर्दशा भांति–भांति।।
लड्डू खाके ही जो मर जाए। उसको विष क्यों फिर दिया जाए।।
हे हनुमंत श्रीराम दुलारे। हरो भुजाओं के कष्ट सारे।। 20।।

हे दीन बन्धु मैं बलि–बलि जाऊँ। नित–नित चरणों शीश झुकाऊँ।।
बालक जान मुझे अपनाया। माया रहित है रहम दिखाया।।
नाथ है तुलसी आपका दास। तुमपे ही आशा और विश्वास।।
कलयुग ने किसको ना सताया। उसने ही मुझको तड़पाया।।
पैर से है सर मेरा दबाए। आप बिना अब कौन बचाए।।
सिंह के हो आप समान। भुजा पीड़ा का करो निदान।। 21।।

उजड़े हुए को बसाने वाले। लंका गढ़ को मिटाने वाले।।
राम भक्तों का आसरा तुम हो। मुझ दुर्बल का सहारा तुम हो।।
आपका सिर पर मेरे है हाथ। फिर भी पीड़ा सहूँ मैं नाथ।।

भुजा मेरी पोखर के समान। पीड़ा है जलचर के समान।।
हे स्वामी सब कष्ट निवारो। मेरी पीड़ा का संहारो।। 22।।

राम, सिया, लक्ष्मण की दया है। साहस मुझको बहुत दिया है।।
आप मेरे संकट प्रभु हरिये। कश्ट दूर मेरे सब करिये।।
देख रोग रूपी सिन्धु है अपार। सुख रूपी बन्दर गये हार।।
जीव रूपी जावन्त आपका। जिसको भरोसा नाथ आपका।।
तुलसी प्रेम पर्वत से कूदिये। हृदय रूपी सुबेल आइये।।
पीड़ा रूप लंकिनी को मारो। मार लात हनुमान पछाड़ो।। 23।।

तीनों लोक नैना दौड़ाऊँ। योग्य आपसा और ना पाऊँ।।
कर्म व काल और लोकपाल। जीव समूह सब रहे सम्हाल।।
अपनी महिमा नाथ विचारों। मुझपे कृपा करनी ना टारो।।
तुलसी है निजी आपका दास। उसके हृदय करो आप ही वास।।
हे स्वामी दुःखी उसको जान। बाहु पीड़ा केवाँच समान।।
जिसको वानरी खेल दिखाओ। उखाड़ा जड़ से सुखी बनाओ।। 24।।

कर्म रूपी नृप कंस है जब तक। डरेगी किससे पूतना तब तक।।
बालघातिनी है वो विकराल। बनती शिशुओं का वो काल।।
नाथ वो सुन्दर बनके है आई। मुझको भी प्रभु जाए न खाई।।
महाबली उसे मार निकालो। अपने दास तुलसी को बचालो।।
बाहू रोग है पूतना जैसा। करो हाल किया कृष्ण ने जैसा।। 25।

विधि, काल या है त्रिदोष की। मिली पीड़ा किस पाप–रोष की।।
दुःख है ये धोखे की छाया। इससे नहीं हूँ मैं घबराया।।
मन की मैली पापिनी पूतना। कपिराज को तू जाने ना।।
भगजा नहीं तो डंका बजाऊँ। तुझको अभी यहीं मरवाऊँ।।
पीड़ा दूर मेरी हो जाई। नही ंतो हनुमत की है दुहाई।।26।।

सिहिंका के बल को संहारा। सुरसा के छल को भी सुधारा।।
लंकिनी को भी तुमने पछाड़ा। अशोकवाटिका भी उजाड़ा।।
लंकापुरी को राख बनाया। दानव दल तब तूने हराया।।

यमराजा का परदा फाड़। मंदोदरी को लाए निकाल।।
तुलसी प्रभु बड़ा सोचकरे। क्यों ना दुःख से करो निहाल।। 27।।

बालकपन के खेल सोचकर। धीरजवान भी जाते हैं डर।।
सूर्य, इन्द्र, राहू सुधि भुलाते। लोकपाल सब हर्ष जताते।।
साम, दान, नीति का विधान। सबके स्वामी हैं हनुमान।।
तुलसी की पीड़ा जो ना हरते। आलस है या दण्ड कोई देते।।28।।

ओ दीनों के पालनहारे। दुःख संकट के टारनहारे।
रोटी के भी घर में थे लाले। आप ही नाथ मुझे तब पाले।।
किया आपने ही पालन–पोषण। भूलोगे फिर मुझे किस कारण।।
मुझको भरोसा आपपे है पर। दुःखी हूँ मगर ये सोचकर।।
तीनों लोकों में कौन आपसा। दुःख सहता है दास आपका।।
बच्चे ज्यों खेल में चिड़ी को मारें। ऐसे तमासा आप निहारें।। 29।।

अपने ही पाप त्रिताप शाप से। पीड़ा है जो कहूँ कैसे आपसे।।
नाथ वो पीड़ा कही ना जाए। अब मुझसे और सही ना जाए।।
औषधि यन्त्र–मन्त्र बड़े कीन्हे। देव मनाए जतन बड़े कीन्हें।।
बृह्मा विष्णु कर्म व काल। काटे आपका कौन सवाल।।
तुलसी को सेवक अपना समझते। काहे ना पीड़ा ये हरते।।30।।

रामदूत मारूति नन्दन। असहायों के सहायक तुम हर क्षण।।
वेद पुराण भी यश हैं गाते। आपसे शत्रु जीत ना पाते।।
रावण को भी चोट तूने मारी। महावली हनुमत बलकारी।।
इतने योग्य तुम नाथ हमारे। दुःख पाऊँ मैं होते तुम्हारे।।
क्यों ना नाथ दुःख मेरा मिटाओ। क्यों नहीं निज प्रभाव दिखाओ।।31।।

देव दनुज मुनि सिद्ध व नाग। भूत–पिशाच–हवा जल आग।।
हर कोई हुक्म तुम्हारे माने। हर कोई तुम्हारे बल को जाने।।
यन्त्र मन्त्र धोखे छलधारी। भागे सुनके दुहाई तुम्हारी।।
मैं खोटा मुझे दण्ड दीजिए। तुलसी को भली शिक्षा दीजिए।।
मेरे दुःख का करो सुधार। हे अंजनी सुत पवन कुमार।। 32।।

वानरों को रावण से जिताए। घर से बेघर असुर बनाए।।
आपके बल हुए राम के काज। आप सजाए थे सब साज।।
जब कोई गुण हैं तुम्हारे सुनाते। बृह्मा, विष्णु नैनन जल लाते।।
तुलसी के सिर पर हाथ निज रख दो। दूर सभी दुःख उसके कर दो।।
मर्यादा जो अपनी निभाते। उनके भक्त ना दुःख हैं पाते।।33।।

आपके टुकड़ों पे मैं पला हूँ। खोंट बख्शिये चरणी पड़ा हूँ।।
दो कौड़ी का मैं कुमार्ग गामी। अपनी ओर पर देखो स्वामी।।
दोष देख ना रूष्ट हो नाथ। सिर पे रख दो मेरे हाथ।।
सेवक की दुर्दशा ना करिये। दास जान के दुःख सब हरिये।।
मैं मछली हूँ जल हैं आप। मैं बालक तो माता आप।।
मेरी स्वामी रक्षा करिये। तुलसी की बाँह पे पूँछ फेरिय।। 34।।

रोग योग बुरे लोगों से घेरा। नाथ ये बन्धन काटो मेरा।।
दिन में घन ज्यों फिरें आकाश। पीड़ा रूपी जल करे बरसात।।
दयानिधान तुम हँसके निहारो। शत्रु रूपी पीड़ा को मारो।।
रोग रूपी राक्षस ने है खाया। जोरावरी से तुमने बचाया।।35।।

हे गोस्वामी श्री हनुमान। राम भक्तों के करते काम।।
आनंद–मंगल मूल ये नाम। कहते हैं सब जिसको राम।।
माता–पिता सम पाला मुझको। पीड़ा भुलाके पुकारूँ मैं उनको।।
हे रघुवंशी प्रभु मेरे राम। दीजिए पीड़ा में आराम।।
जिससे दुर्बल पंगु भी होकर। पड़ा रहूँ चरणों को पकड़कर।। 36।।

पाप का फल है या है कर्म की मार। रात–दिन दुःख सहूँ अपार।।
उसी बाँह को दुःख ने जकड़ा। जिसको पवन कुमार ने पकड़ा।।
आपने ही मैं वृक्ष लगाया। तापो की ज्वाला से क्यों झुलसाया।।
नजर दया की कीजिए स्वामी। कृपा के जल से सींचिए स्वामी।।
सबपे दया राम तुम करते। सारे जग के कष्ट समझते।। 37।।

पाँव की पीड़ा पेट की पीड़ा। बाहू की पीड़ा मुख की पीड़ा।।
सारा शरीर ही जीर्ण–शीर्ण है। कण–कण में व्यापी है पीड़ा।।

प्रेत पितर ग्रह कर्म व काल। सब मेरा किए हैं बुरा हाल।।
बचपन से तुमको बिक चुका हूँ। मांथे पे राम नाम लिख चुका हूँ।।
क्या स्वामी कभी ऐसा हुआ है। सेवक आपका दुःखी रहा है।। 38।।

नीच सुबाहु बाहु की पीड़ा। मारीच रूपी है देह की पीड़ा।।
मुख की पीड़ा है ताड़का रूपी। अन्य रोग बड़े राक्षस रूपी।।
राम–नाम यज्ञ करना चाहूँ। इनका नाश मैं करना चाहूँ।।
राम–नाम की महिमा भारी। मैं भी हूँ उसपे बलिहारी।।
सहायक मेरे प्रभु बनेंगे। नाश सभी रोगों का करेंगे।।
बनाऐंगे बाणों का निशाना। इनको बड़ के फल के समाना।। 39।।

बाल्यावस्था में मैं सीधे मन से। राम भजन करता था लगन से।।
टुकड़ा–टुकड़ा मांग के खाता। चरणों में जीवन था बिताता।
पर संसार में नियत आई। प्रीत मेरी जिसने तुड़वाई।।
तब अंजनी सुत ने अपनाया। प्रभु से मेरा सुधार कराया।।
तुलसी गोसांई हुआ दिन भुलाए। आज उन्हीं की तो सजा पाए।।40।।

भोजन बिन और वस्त्रों बिन। कैसे कटते थे दीन के दिन।।
लेकिन रघुवर दया दिखाए। अनाथ को वो सनाथ बनाए।।
पोक प्रतिष्ठा और सम्मान। आ गया मुझमें भी अभिमान।।
राम भजन को जबसे छोड़ा। कष्टों ने हैं नाता जोड़ा।।
हैं जो ये बरतोर भंयकर। निकले हैं राम का नमक फूटकर।। 41।।

राम भक्त जग में कहलाऊँ। काशी में मरके मुक्ति जो पाऊँ।।
लड्डू हैं मेरे दोनों हाथ। लेकिन नहीं ये अच्छी बात।।
राम का दास मैं जग में कहाता। हूँ इसपे मैं गर्व जताता।।
छोड़ के उनको दूर ना जाऊँ। चरणों में ही मोक्ष मैं पाऊँ।।
शिव का भक्त ना मैं विष्णु का। मैं तो भक्त बस राम प्रभु का।।
उनके सिवा ना कोई सहारा। हरे जो पीड़ा कष्ट हमारा।। 42।।

हनुमत आपके राम सहायक। शिव हितोपदेशक गुरू हैं लायक।।
मैं तो आपकी शरण हूँ स्वामी। महाबली हे अन्तर्यामी।।

आपके होते ना देवों को मानूँ। आपको ही रक्षक निज जानूँ।।
रोगोपद्रव की पीड़ा हरिये। नाथ दया सेवक पर करिये।।
शिव शंकर हे राम हनुमान। रोग सिन्धु करो खुर के समान।। 43।।

मैं हनुमान से राजा राम से। विनती करूँ शिव दया निधान से ।।
बात सुनो मेरी देकर ध्यान। विधाता है सबको ही समान।।
सबको दुःख–सुख, गुण व दोष दिए। सबको रोगी निरोगी वो किए।।
काल, कर्म, स्वभाव और माया। वेद कहें सब राम की छाया।।
सबका संचालन वही करते। सबकी डोरी हाथ वो रखते।।
कहे तुलसी यही मैंने माना। तभी तो ये निज मन में जाना।।
प्रभु जो ना कुछ तुम कर पाते। तो हम भी ना दुःख बतलाते।।
आप ही हो सब करने वाले। सुख–दुःख सबको देने वाले।।
आप से क्या नहीं हो सकता है। कहो दास विनती करता है।।
हो समर्थ करो सारे काम। हे रघुनन्दन हे सियाराम।।
तुलसी आपका रहे गुलाम। चरणों में हो सुबहा शाम।।44।।

।। हनुमान बाहुक समाप्त।।